

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये युद्धकाण्डे

॥ षट्त्रिंशः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बुगभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ षट्त्रिंशः सर्गः ॥

माल्यरत्नं निर्भर्त्स्य नगरगुप्तिं रिधाय रारणस्य निजान्तःपुरे  
गमनम्

तत् तु माल्यरतो राक्यं हितमुक्तं दशाननः।  
न मर्षयति दुष्टात्मा कालस्य रशमागतः ॥ 6.36.1 ॥

स बद्ध्वा ऋकुटिं रक्त्रे क्रोधस्य रशमागतः।  
अमर्षां परिरुत्ताम्फो माल्यरत्नमथार्वरीं ॥ 6.36.2 ॥

हितबुद्ध्या यदहितं रचः परुषमुच्यते।  
परपम्फं प्ररिशैर्यं नैतच्छ्रात्रगतं मम ॥ 6.36.3 ॥

मानुषं कृपणं राममेकं शाखामृगाश्रयम्।  
समर्थं मन्यसे केन त्यक्तं पित्रा रनाश्रयम् ॥ 6.36.4 ॥

रम्फसामीश्वरं मां च देरानां च भयङ्करम्।  
हीनं मां मन्यसे केन अहीनं सररिक्त्रमैः ॥ 6.36.5 ॥

रीरद्वेषेण रा शङ्के पम्फपातेन रा रिपोः।  
रयाहं परुषाण्युक्तो परप्रोत्साहनेन रा ॥ 6.36.6 ॥

प्रभरत्नं पदस्रुं हि परुषं कोहभिभाषते।  
पण्डितः शास्त्रतद्भुज्जो रिना प्रोत्साहनेन रा ॥ 6.36.7 ॥

আনীয চ বনাং সীতাং পদমহীনামির শ্রিয়ম্।  
কিমর্থং প্রতিদাস্যামি রাঘবস্য ভযাদহম্ ॥ 6.36.8 ॥

বৃত্তং বানরকোটাভিঃ সসুগ্রীরং সলক্ষ্মণম্।  
পশ্য কৈশ্চিদহোভিশ্চ রাঘবং নিহতং মযা ॥ 6.36.9 ॥

দ্বন্দ্রে যস্য ন তিষ্ঠন্তি দৈবতান্যপি সংযুগে।  
স কস্মাদ্ রারণো যুদ্ধে ভযমাহারযিষ্যতি ॥ 6.36.10 ॥

দ্বিধা ভজ্যেযমপ্যেবং ন নমেযং তু কস্যচিৎ।  
এষ মে সহজো দোষঃ স্বভারো দুরতিক্রমঃ ॥ 6.36.11 ॥

যদি তারং সমুদ্রে তু সেতুর্বন্ধো যদৃচ্ছয়া।  
রামেণ রিস্মযঃ কোহত্র যেন তে ভযমাগতম্ ॥ 6.36.12 ॥

স তু তীর্নার্ণরং রামঃ সহ বানরসেনযা।  
প্রতিজানামি তে সত্যং ন জীরন্ প্রতিযাস্যতি ॥ 6.36.13 ॥

এবং ব্রূরণং সংরন্ধং রুষ্ঠং বিজ্ঞায় রারণম্।  
বীড়িতো মাল্যরান্ বাক্যং নোত্তরং প্রত্যপদ্যত ॥ 6.36.14 ॥

জযাশিষা তু রাজানং বর্ধযিৎরা যথোচিতম্।  
মাল্যরানভ্যনুজ্ঞাতো জগাম স্বং নিরেশনম্ ॥ 6.36.15 ॥

রারণস্তু সহামাত্যো মন্ত্রযিৎরা রিমৃশ্য চ।  
লঙ্কায়ান্তু তদা গুপ্তিং কারযামাস রাক্ষসঃ ॥ 6.36.16 ॥

ব্যাদিদেশ চ পূর্বস্যাং প্রহস্তং দ্বারি রাক্ষসম্।  
দক্ষিণস্যাং মহারীর্ষৌ মহাপাশ্রমহোদরৌ ॥ 6.36.17 ॥

পশ্চিমাযামথ দ্বারি পুত্রমিন্দ্রজিতং তদা।  
ব্যাদিদেশ মহামাযং রাক্ষসৈর্বহুভির্ভূতম্ ॥ 6.36.18 ॥

উত্তরস্যাং পুরদ্বারি র্যাশিশ্য শুকসারণৌ।  
স্বয়ং চাত্র গমিষ্যামি মল্লিগস্তানুরাচ হ ॥ 6.36.19 ॥

রাক্ষসং তু রিরূপাক্ষং মহারীর্যপরাক্রমম্।  
মধ্যমেহস্থাপযদ্ গুল্মে বহুভিঃ সহ রাক্ষসৈঃ ॥ 6.36.20 ॥

এবং রিধানং লঙ্কায়াং কুৎরা রাক্ষসপুঙ্গরঃ।  
কৃতকৃত্যমিরাঅ্মানং মন্যতে কালচোদিতঃ ॥ 6.36.21 ॥

রিসর্জযামাস ততঃ স মল্লিগো  
রিধানমাজ্জাপ্য পুরস্য পুঙ্কলম্।  
জযাশিষা মল্লিগণেন পূজিতো  
রিরেশ সোহন্তঃপুরমৃদ্ধিমন্মহৎ ॥ 6.36.22 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে যুদ্ধকাণ্ডে ষট্টিত্রংশঃ সর্গঃ ॥